# कन्नड साहित्य में राम

**डॉ. गीता एच तलवार**

**शोध सार :**

भारतीय इतिहास में रामायण और महाभारत प्रसिद्ध ग्रंथ है। ये हमारे भरतखंड के राष्ट्रकाव्य माना जाता है। संस्कृत भाषा में लिखा हुआ है इस का आधार मानकर अनेक भाषाओं में लिखा गया हैं। समग्र कथा को नहीं एक-एक प्रसंग को एक एक पूर्ण कथा के रूप में लिखा गया हैं वाल्मीकि और व्यसमहाराज दोनों इतिहास के कर्ता है। कन्नड साहित्य में मूल रामायण से प्रेरित होकर इस महा काव्यों को गध्य-पध्य दोनों भागों में लिखा गया हैं कन्नड साहित्य में पहले कुमारवाल्मीकि द्वारा लिखा गया ग्रंथ का नाम है "तूरवे रामायण" इसके रचनाकार का मूल नाम नरहरी है।

**बीज शब्दः** कन्नड़ साहित्य, कन्नड़ भाषा, राम, रामकथा, रामायण

दुनिया में वाचन में श्री रामायण असाधारण काव्य ही नहीं अमरकाव्य है। यह महाकाव्य चरित्रिक महाकाव्य मना जाता है यह एक महापूरूष का दिव्य चरित्र है आदर्श राजा, आदर्श पूरुष और आदर्श बातृ बनके अवतार पूरुष बनने का जो श्रेष्टता को अमर बना ने का श्रेयस राम को मिलता है इस लिए रामायण एक आदर्शकाव्य हैं।

इस आदिकाव्य रामायण से प्रेरित प्रथम प्रयास कुमार वाल्मीकि ने रचना किया गया है।

मूल रामायण और कुमारवाल्मीकि वे बीच थोडा सा अंतर है मूल कथा और कुमार वाल्मीकि में कथा प्रारंभ से लेकर अंत तक कहानी एक ही है बस उतंरखण्ड एक बो हि खण्ड का विवरण नहीं दिया गया हैं।

तोरवे रामायण के बाद कन्नड साहित्य में रामायण के अनेक ग्रंथ लिखा गया

1. पम्प रामायण या रामचन्द चरित पूराण
2. कुमुदेंदु रामायण
3. रामविजयकाव्य
4. उत्तरामायण
5. अव्दैत रामायण
6. योगिन्द्र उत्तर रामायण
7. श्री मद्रामायण अथवा रामकथाथ्युदय मूलक रामायण
8. रामचन्द्र चरित
9. मार्क्रण्डेय रामायण

10. शंकर रामायण
11. अध्यात्म रामायण
12. मूलबल रामायण
13. जीन रामायण
14. अध्यात्म रामायण
15. अद्भुत रामायण
16. रामाश्वमेध
17. श्री राम पट्ठाभीषेक
18. कर्नाटक रामायण संग्रह
19. शेष रामायण
20. कन्नड उत्तर रामचरितें

श्री रामायण दर्शनम-कुवेंपु व्दारा रचित ग्रंथ कों ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। एक वाल्मीकि रामायण और कुवेंपु जी का श्रीरामायणदर्शनम एक युग के अंतिम छोर पे एक कृति और इस अंतिम आधुनिक युग का कर्ता है।

रामायण महाकाव्य इतिहास में प्रमुख कृति है। सम्पूर्ण भारतखण्ड पर प्रभावित होते हुए लोगों के जीवन में परिवर्तन लाया है। उनके जिवन कों सास्कृंति एकता कों बनाये रखने में महाकाव्य सक्षम है। जन जीवन के जीवन की आंशो कों और समस्यां कों सरल मार्ग दिखाने में निरंतर प्रयोग किया गया है।

एक एक युग अलग अलग समस्याओं से गुजरने से भी हर युग के लिए महाकाव्य मार्गदर्शक बने है। महाकाव्य के पात्र हर एक सामान्य व्यक्ति के जीवन के समान पात्र रचना किया गया है। इस लिए इन महाकाव्य कों दुनिया के सभी भाषाओं में और अलग अलग परिसर में और अलग अलग युग में मूल्यांकन विमर्श किया गया है। एक एक पात्रों कों लेकर मूल्यांकन किया गया और युग के अनुसार महाकाव्य के पात्रों की विमर्श किया गया है।

कन्नड साहित्य में महाकाव्य कों अनेक साहित्यकारों पर प्रभावित किया हैं हर एक साहित्यकार दोनों महाकाव्यों कों एक नये दृष्टियों से देखने की कोशिश किया गया है। एक नया रामायण से रचना करने का प्रयास किया गया है। एक नया रामायण कों रचना करने का प्रयास किया गया है । वाल्मीकि रामायण से प्रभावित होकर आधुनिक काल में आधुनिक परिवेष के अनुसार नया रामायण कों श्री रामायणदर्शनम नाम से रचना किया गया इस एक आधुनिक कन्नड साहित्य में एक मिसाल माना जाता है। इसका रचनाकार कन्नड साहित्य के महान साहित्यकार कुवेंपु जी ने रचना किऐ है।

कलेयनल्लदे शील्पी शिलेयने सृष्टिपने?

तन निन्मदादॊडम चैतन्य मॆन्भुदॆनॆ
कथॆ मन्निदादॊडवॆ नीनॆ मॆणातीर्वदिक्षी
मतीगॆ क्रॊधावनित्तॊडम कृति नत दर्शनम
मूर्तिवॆत्वॊंदमर काव्यदाकृतियल्लॆ?

इसका अर्थ यह है कि शिल्पकार शीला या पत्थर कॊ सृजन नहीं करता पत्थर सॆ शिल्प कॊ मूरत सृजन करता है वैसॆ ही वाल्मीकि जी की रामायण सॆ अपनॊं नॆ नया रचना नया पात्र कॊ सृजन करतॆ है वैसॆ कुवॆम्पु जी अपनी महाकाव्य एक संशॊधन है नया मिसाल है आधुनिक काल का नया रामायण कॊ सृजन छॊटी बात नहीं वाल्मीकि र्मायण कॊ प्रतिभिंब कॆ रुप में रचना किया गया है श्री राम कॊ आधुनिक काल कॆ परिवॆश कॆ साथ उस पात्र कॊ नयॆ आविष्कार किया है नया युग में रामायण कॆ राम अवतार कॊ पुरुष कॆ रूप में आराध्य भगवान का दर्जा दिया है।

श्रीरामायण दर्शनम एक आधुनिककाल का महाकाव्य माना जाता है गाँधीवाद अहिंसात्मक तत्व का प्रतिपादन किया गया है। श्री रामचद जी का अवतार भगवान विश्णु जी का अवतार माना गया है ग्रंथ कॆ प्रारम्ब में "वॆंकण्णनवरॆ" कारकॆ और श्रीरामन लॊकदिंदवतरिसी बन्दु कहतॆ स्पष्ट रूप सॆ अवतार पूरुष श्री राम कॊ ही माना है। मूल रामायण और श्री रामायण दर्शनम में कुछ अंश अंतर दॆख सकतॆ हैं।

पूर्व पद्धति एडिदु
मळव दिग्वीजय हयमॆघ मॊदलादम
तॊरॆदू हिसा क्रौर्य मिल्लदिह प्रॆमक्कॆ
नॊंतु दॆवकर्मकम पूजीसल मॆच्चुहुद
जगवनाळ ऋतु
हिंसॆइंदॆ प्रॆममूर्तिगळाद संतानमुदिसम

यहाँ राम अवतार कॊ अहिंसावाद कॆ यज्ञ सॆ संतृप्त हॊकर लॊगॊं कॆ उद्दार कॆ लिए भगवान राम का अवतार हुआ। मूल वाल्मीकि रामायण में राम का अवतार रावणनामक राक्षस का संवार कॆ लिए इस धरती पर विश्णु जी का रामवतार हुआ पर कुवॆंपू जी का श्री रामायण दर्शनम में रावण कंस कॆ कृर व्यक्तित्व मात्र नाश करनॆ कॆ लिए जन्म लिए है । जैसॆ भगवान बुद्ध और यॆसु का अवतार उद्धार कॆ लिए जन्म हुआ है।

इ लॊकसंभवॆयनॆम्न भूमातॆयम
सीतॆयम वरिसुताकॆय नॆवदि मुच्छाक्तियम
मर्दिसुतॆ संवर्दसिर्पवालू चीचक्तियम

श्री रामायण दर्शनम में राम और सीता कॊ राजा रानी या पति पत्नि लौकिक दृष्टि सॆ नहीं दॆखा है उन रूपॊं कॊ शिवशक्ति पूरूष पृकृति कॆ जैसॆ नित्य सत्य कॊ दृष्टि सॆ दॆखा गया है।

श्री राम कॊ शुद्ध ब्रह्म पराप्तरम परम पुरुषॊत्तम धरती पर अवतरीत हॊकर धरती माता प्रकृतिमय सीता कॊ विवाह करकॆ उसकॆ जरिए रावण नामक तम शक्ति रावण कॊ संवार करता है

आदर्श पुरुषॊत्तम राम का आदर्श गुण कॊ और एक प्रसंग में दिखाया गया है।

राम और रावण युद्ध करतॆ समय रावण कॆ रथ कॆ सारति न हॊनॆ कॆ कारण राम-रावण कॊ कहता है कि- जा आज तुम बहुत थक चुकॆ हॊ रथ सारती भिना आपत्ति मॆ है कल सारती कॆ साथ रथ रूढ हॊकर युद्ध भूमि में आनॆ कॆलिए कहता है।

यहाँ कवि राम कॊ एक आदर्शमानव आदर्शावतारी आदर्श राजा कॆ रूप में दर्शन की कॊशिश करतॆ है । आज भी हम राम राज्य का सपना दॆखतॆ है प्रजा कॆ सॆवा करना प्रजाओं कॆ धर्मदर्शी कॆ रूप में राम कॊ उदाहण लॆतॆ है।

सीतामय्या कॊ आत्मा और श्रीराम कॊ परमात्मा कहा गया है परमात्मा आत्मा कॊ ढूंडतॆ हुए धरती पर आतॆ है इससॆ सिद्ध हॊता है कि रामायण कॊ आध्यात्मिक अर्थ दिया गया है।

श्रीभगवान अवतार कॊ लिखा एक प्रसंग इस प्रकार है एक बार एक वानर सैनिक राम कॊ अवतार पूरुष कैसा रहता है? यह प्रश्न पूछता है उत्तर कॆ रूप में श्री राम कहतॆ है क्या अवतारी पूरुष कॊ क्या सिंग नहीं हॊतॆ इसका अर्थ यह है कि अवतार हॊना बाह्य लक्षण सॆ नहीं अंतरिक यानी अंतरण की बदलाव या अवतार यानी दॆह सौंदर्य कॊ प्रवदान नही दिया गया श्री राम कॊ सौदंर्य कॊ लॆकर

श्री रामनाल्हाद रूपी औदार्य नीधी
निरसूसॆयम सर्वरसुराग भजनम
कली मत्सरविमारत्मंत शांतखनी
प्रियभाषी तीतसख्म मितमार्गि धिरवशी
नगुमॊगद संयमी कृतज्ञातामूर्ति मॆह ज्ञानी
सज्जन प्रॆमी सूक्ष्ममती पडिंतम
शृतिविवम सुविचारी नित्यम प्रजाप्रॆमी
सुस्तिरम संबुद्ध प्रज्ञा महॆश्वरीम
रसदर्शनस्वादम गैव सहज कवि
श्रृति शास्त्र काव्य रससृति यॊगि

यंहा श्री राम कॊ बाह्य सौदंर्य कॊ न दर्शाया गया है उसकॆ स्वभाव अंतरग का वर्णन किया गया है बाह्य सौंदर्य शाश्वत नहीं अतंरग मन कॊ प्रामुख्यता दिया गया है।

आगॆ श्री रामायण दर्शनम में तत्वशास्त्र कॆ दृष्टि सॆ राम ही रामण है राम ही विष रामामयी विश्व जैसॆ चाही है वह उस सृष्टि कॊ नियम कॊ तॊड सकता है। एक प्रसंग संमन्दर कॊ पार करनॆ कॆ लिए प्रसंग मॆं राम बाण चलाकर संमदर का पानी सुखा दॆता है। यहाँ श्री राम का उग्र रूप कॊ दिखा

गया है अवतारी पूरुष होनॆ कॆ बावजूद भी राम अप्लवानर कॆ साथ मिलकॆ सॆतु निर्माण करतॆ हैं। अवतार पूरुषोत्तम राम है पर धरती पर अवतार अर्थाथ सामान्य मनुष्य का अवतार सॊ सामान्य मनुष्य कॆ रूप में मनुष्य स्वभाव कॆ अनुसार कष्ट सहना दुखी होनाकृधित होना प्रॆम विरह सभी अनुभवॊं कॊ अनुभव करता है।

श्री रामायण दर्शन एक नया प्रंसग सृष्टि किया जाता है मूल वाल्मीकि रामायण में वाल्मीकि सीता मया कॊ अग्नि प्रवॆश करवातॆ है पर कुवॆंपु रचित श्री रामायण दर्शनम में सीता मय्या कॆ साथ श्री राम भी अग्नि प्रवॆश करतॆ हैं यहाँ इस महा काव्य का अदभूत प्रसंग माना जाता हैं

यह प्रंसग कॊ दुनिया कॆ कॊई भी अन्य ग्रंथ में नहीं लिखा पर श्री रामायणदर्शनम में कुवॆंपु जी नॆ एक नया मिसाल खडा किया आदर्श राम होनॆ कॆ कारण सीता अकॆली अग्नि प्रवॆश नहीं करती उनकॆ साथ राम अग्नि परिक्षा लॆतॆ है [कारण विभिषण की पूत्री कॆ सौंदर्य राम दॆ का था] सॊ इस लिए राम भी अपनी अंतरंग शुद्धि कॆ लिए अग्नि परिक्षा लॆता है दुसरा कारण कि अपनी अवतार का उद्दॆश्य पूर्ण रूप सॆ समाप्त न करनॆ कॆ कारण अपनॆ आपकॊ परिक्षा दॆतॆ हैं।

श्री राम एक आदर्श मित्र भी है और विश्वासी भी, अपनॆ मित्र कॊ दिया हुआ वचन कॊ निभानॆ कॆ लिए सारा संसार सॆ अपमान सहनॆ कॆ लिए तयार थॆ सुग्रीव सॆ साथ मित्रता होनॆ कॆ बाद सुग्रीव कॆ शत्रु कॊ अपना शत्रु मानकर उसॆ मारनॆ सॆ भी पीछॆ नही हठॆ।

श्रीराम अपनॆ श्त्रुओं कॊ भी गौरव माननॆवालॆ महापुरुष है शत्रुओं सॆ ज्यादा गौरव गुणग्रही रावण शत्रुता सॆ ज्यादा पराक्रर्मी भक्त कॆ रूप में दॆखतॆ है।

इसॆ श्रीराम आदर्शमानव, आदर्शावतारी आदर्श राजा आज भी रामराज्य का कल्पना करतॆ है।

सृष्टिय समष्टि प्रज्ञॆय सामूहिक विकासक्कागियु
सॆर्वोत्तोमुखवाद चैत्न्यॊंनॆषनक्कगियु
नवॊनव ऋतश्तित प्रकाश्नक्कागि
भगवतारद अवश्यकतॆ वदगुत्तदॆ
यदा यदा ही धर्मस्य
ग्लानिर्भवती भारत
अभ्युत्थनधर्मास्य तदात्म नम सृजाह्यम्हः

रामका अवतार सिर्फ रावण का वद कॆ लिए नहीं सपूर्ण सृष्टि कॆ विकास कॆ लिए हुआ है। विष्णु हर अवतार में अपना दैवी शक्ति का कहीं भी न दिखा या है पर राम अवतार में सामान्य आदर्शपूरुष पातॆ है।

सन्दर्भ सूची

१. गन्गॊत्री; कुवॆंपु अभीनन्दना ग्रंथ
२. सरल रामायन
३. श्री रामायण दर्शनम-[काव्य विमर्शा]

**डॉ. गीता एच तलवार**
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
सरकारी कला और विज्ञान महाविध्यालय[ स्वायत्त] कारवार